International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(6): 134-135

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(6): 134-135
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-09-2021
Accepted: 06-10-2021

डॉ. रश्मि पन्त
असिस्टेंट प्राफेसर–इतिहास, इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला वाणिज्य महाविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रश्मि पन्त
असिस्टेंट प्राफेसर–इतिहास, इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय स्नातकोत्तर महिला वाणिज्य महाविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

कालिदास और उत्तराखण्ड

डॉ. रश्मि पन्त

प्रस्तावना

कालिदास पांचवी सदी में संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। पहाड़ की रवानी ऐसी है कि यहां की रचनात्मक प्रक्रिया ही मैदानों से थोड़ा अलग किस्म की है। इसका जीवन विन्यास तो और भी अलग है। इसके पर्वत, नदी, घाटी अपने अंदर अनेक तरह की संवेदनाओं को समेटे हुए हैं। महाकवि कालिदास जो मां सरस्वती के अनन्य उपासक थे उनका भी उन पहाड़ों से गहरा नाता रहा।(जन आखर 24सितम्बर 2020) काव्य शक्ति और प्रतिभा के कारण, उन्हें कविकुलगुरू की उपाधि से सम्मानित किया गया है। स्कन्द पुराण में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षंत्र को मानसखण्ड व गढ़वाल क्षेत्र को केदारखण्ड कहा गया है। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त ने अपने राज्य के प्रत्यन्त अर्थात सीमान्त पर स्थित समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल और कतृपुर के नृपतियों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। (डबराल,2052,463) कतृपुर की पहचान उत्तराखण्ड से की जाती है।

कालिदास की जन्मस्थली को लेकर भी विवाद है। मेघदूतम् में उज्जैन के प्रति उनके विशेष प्रेम को देखकर कुछ लोग उन्हें उज्जैन का निवासी मानते हैं। वे कहते हैं कालिदास उज्जैन में जन्मे थे। लेकिन महाकाव्य 'मेघदूत' में बताया गया है कि कालिदास लंबी यात्रा करके उज्जैन गए थे और सम्राट विक्रमादित्य के राजमहल में रहे थे। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि कालिदास की जन्मभूमि कश्मीर थी और इसके पक्ष में वो भी अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। कतिपय लेखकों ने यह साबित करने की भी कोशिश की है कि कालिदास का जन्म उत्तराखण्ड के रूद्रप्रयाग जिले के काविल्ठा गॉव में हुआ था। कालिदास ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा यहां प्राप्त की और यहॉ उन्होंने मेघदूत, कुमारसंभव और रघुवंश जैसे महाकाव्यों की रचना की।कविल्ठा चारधाम यात्रा मार्ग पर गुप्तकाशी में स्थित है। गुप्तकााशी से कालीमठ सिद्धपीठ के रास्ते पर , कालीमठ मंदिर से चार किलोमीटर आगे कवेल्थ गॉव स्थित है।

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य, हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते, निमज्जतीन्दोःकिरणेष्विवांड्कः।।3।।
आमेखलं सञ्चरतां घनानां, छाया मधःसानुगतां निपेव्य।
उद्वेजिता वृश्टिभिराश्रयन्ते, श्रृङ्गाणि यस्तातपवन्ति सिद्धाः।।5।।

उपरोक्त श्लोकों में हिमालय की भव्यता का वर्ण्न हो या उसके पल–पल परिवर्तित स्वरूप का वर्णन हो या निर्झर बहती भागीरथी का वर्णन हो अथवा निम्न श्लोक में देवदारू वृक्षराशि का इतना सजीव चित्रण हो, बिना उनका साक्षात्कार किये सम्भव नहीं था।

भगीरथीनिर्झरसीकराणां वोढा मुहुः कम्पितदेवदारूः ।
यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिखण्डिबर्हः।।15।।

महाकवि कालिदास के जन्मस्थान आदि के विषय में कोई प्राचीन प्रामाणिक लेख उपलब्ध नहीं है। महाकवि की कृतियों के अन्तःसाक्ष्य के आधार पर ही इसका अनुमान किया जा सकता है और इस दृष्टि से विचार करें तो हिमालय के प्रति महाकवि कालिदास का ममत्व सर्वाधिक दृष्टिगोचर होता है। हिमालय में भी महाकवि ने सर्वत्र भागीरथी – अलकनन्दा के निर्झर–सीकरों से श्रम–परिहार करने वाले प्रदेश केदारखण्ड का ही स्मरण किया है। 'अभिज्ञान–शाकुन्तलम्' की नायिका शकुन्तला की दुष्यन्त से भेंट मालिनी–तट पर स्थित कण्वाश्रम में होती है। 'मेघदूत' का यक्ष अलकापुरी से निर्वासित

होकर रामगिरि पर्वत पर निवास कर रहा है और उसके सन्देश–वहिक मेघ का गन्तव्य अलकापुरी है। 'रघुवंश' में दिलीप ने इस पुण्य क्षेत्र में वशिष्ठाश्रम के समीपवर्ती वन में गोचारण किया था। यह वशिष्ठाश्रम केदारखण्ड में ही स्थित है, यह इस श्लोक से स्पष्ट हो जाता है–

> अन्येद्युरात्मानुचरस्य भवं जिज्ञासमाना मुनिहोमधेनुः।
> गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पं गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश।।
> रघुवंश 2/26

दूसरे दिन अपने अनुचर (दिलीप) के (दृढ़–भक्ति) भाव की परीक्षा करने के लिए मुनि (वशिष्ठ) की यज्ञ– धेनु(नन्दिनी) गंगा के तटवर्ती प्रदेश में, जहॉ कोमल घास उगी हुई थी, हिमालय की एक गुफा में प्रवेश कर गयी।'

रघु की दिग्विजय के प्रसंग में भी महाकवि रघु को हिमालय के इस प्रदेश में लाया है और इस प्रदेश के महत्व तथा इसके प्रति अपने ममत्व के अनुरूप उसने इस प्रसंग को दस श्लोकों का विषय बनाया है(रघु 4,71–80)। 'कुमार सम्भव' का प्रारम्भ तो देवात्मा हिमालय के 'भगीरथी निर्झर–सीकरों' से आह्लादित प्रदेश के यशोगान से ही होता है।(वसुधारा,1981, पृ0 14)

> अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
> पूर्वापरौ तोयनिधि वगाह्य, स्थितःपृथिव्या इव मानदण्डः।।1।।कुमारसंभव 1/1

यों तो महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में जिस भी देश का उल्लेख किया है, उसकी प्रमुख विशेषता से अपना परिचय प्रकट कर दिया है, परन्तु जितना गहरा परिचय उसने केदारखण्ड प्रदेश से प्रकट किया है, उतना अन्य किसी से नहीं। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी। 'कुमारसम्भव' में कामदेव भगवान शंकर को तपस्या से विचलित कर पार्वती की ओर अभिमुख करने के उद्देश्य से शिव की तपःस्थली के समीप एक वृक्ष पर छिप कर बैठता है। शिव 'देवदारू–द्रुम–वेदिका' पर ध्यानस्थ हैं। स्पष्ट है कि शिव की यह तपःस्थली एक देवदारू–वन है। यदि यह प्रसंग किसी ऐसे कवि के हाथ पड़ा होता जिसका हिमालय से बहुत समीप का घनिष्ठ परिचय न होता तो वह कामदेव को भी देवदारू पर ही छिपाने का उद्योग करता; परन्तु कालिदास जानते थे कि देवदारू में छिप सकने की सुविधा नहीं होती। हिमालय के इस प्रदेश से घनिष्ठ रूप से परिचित होने के कारण कालिदास जानते थे कि देवदारू वाले प्रदेश में देवदारू के समीप एक अन्य वृक्ष भी पाया जाता है, जो बॉज की जाति का होने के कारण सुदृढ़, प्रलम्ब, घनी शाखाओं तथा घने पल्लवों वाला होता है जिसमें आराम से छिपा जा सकता है। इस वृक्ष को आज की स्थानीय भाषा में 'मौरू' कहते है। कालिदास ने इसे 'नमेरू' कहा है और कामदेव को नमेरू में छिपाया
है–'प्रान्तेषु संसक्तनमेरूशाखं ध्यानास्पदं भूतपतेर्विवेश (कुमार0:3,43)'। कालिदास का इस प्रदेश की वानस्पतिक सम्पदा से इतने घनिष्ठ रूप से परिचित होना इस सम्भावना को पुष्ट कर देता है कि वे इस प्रदेश के निवासी थे। (वसुधारा,1981,14–15)

कालजयी लेखक स्व0 आचार्य धर्मानन्द जमलोकी ने कालिदास की तीन महान रचनाओं कुमारसम्भव, मेघदूत,और रघुवंश का विस्तृत अनुवाद किया है। इन्हीं रचनाओं में कालिदास के उन खास प्रयोगों को दिखाया गया है। उदाहरण के लिए पहाड़ के वैवाहिक रीति–रिवाजों को बार–बार कहना, आंगन में चावल और गेरू से ज्यामितीय मांडने की रचना किसी आकाशीय परम तत्व को प्रसन्न करने के लिए उसको आटे और गुड़ वाले व्यंजन भेंट देना। लड़के वालों का एक उपयुक्त लड़की वधु रूप में ढूंढने जाना, हल्दी और हरी दूब से मंगल स्नान, वस्त्राभूषण और अनेक ऐसे अनुष्ठानों का वर्णन किया गया है जो केवल उत्तराखण्ड में ही प्रचलित हैं। ऋतु संहार में शीत ऋतु का इतना सुन्दर वर्णन पर्वतीय क्षेत्र में प्रवास के दौरान अनुभव से ही हो सकता था।

किसी प्रामाणिक साक्ष्य के अभाव में यदि हम कालिदास की जन्मस्थली को स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं कर सकते पर उपरोक्त साक्ष्यों के प्रकाश में इतना तो अवश्य कह सकते हैं कि कालिदास का उत्तराखण्ड क्षेत्र में इतना दीर्घप्रवास तो अवश्य रहा होगा जितने समय में कोई नये स्थान से पूरी तरह वाकिफ हो जाए और वो जगह उसके रग–रग में बस जाये और आचार–व्यवहार में परिलक्षित होने लगे जैसे कि महाकवि कालिदास के संदर्भ में। कालिदास जैसी महान विभूति से जन्म अथवा प्रवास का सम्बन्ध उत्तराखण्ड के लिए गौरव का विषय है।

सन्दर्भ

1. डबराल, शिव प्रसाद, सम्वत् 2052 वि0, उत्तरांचल– हिमालय का प्राचीन इतिहास, वीरगाथा प्रकाशन दोगड्डा गढ़वाल।
2. पूनम पाण्डे विशेष संवाददाता, 24 सितम्बर 2020, जन आखर राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक।
3. पाण्डेय प्रद्युम्न, 1994, कुमारसम्भवम्, चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी।
4. लखेड़ा, महावीर प्रसाद, मई 1981, वसुधारा, गढ़वाल साहित्य परिषद प्रयाग।
5. शास्त्री, बदलू राम, कालिदास की रचनाओं के सामाजिक सांस्कृतिक तत्व एवं काव्य सौन्दर्य, Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education.
6. https://www.rajyasameeksha.com
7. https://sanjeevnitoday.com
8. www.patrika.com